DAINIK TRIBUNE *CHANDIGARH*

बाबू मूलचंद जैन : आदर्शों में गुंथा प्रेरक व्यक्तित्व

—डा. राजा राम—

हरियाणा के स्वतंत्रता सेनानी बाबू मूलचंद जैन द्वारा सक्रिय जीवन के 75 बरस पूरे करने पर हीरक जयंती समारोह के माध्यम से करनाल में पिछले दिनों उनका अभिनंदन किया गया है। सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों में बाबूजी के योगदान अमूल्य निधि है। बाबूजी का आज सत्ता से बहुत दूर हैं अतः इस आयोजन का महत्व अधिक हो गया है।

बाबूजी का जीवन-रथ सुनने में जितना पुराना लगता है, देखने में उतना ही नया है। इनके जीवन-रथ के चेतना तथा ऊर्जा, इन दोनों पहियों की चमक-दमक और तंदुरुस्ती आज भी बरकरार है। बाबूजी से मेरा पहला परिचय 1979 में हुआ, तब वे चौ. देवीलाल सरकार के खज़ाना मंत्री थे और मैं हरियाणा स्कूल शिक्षा बोर्ड का अध्यक्ष था। परीक्षाओं के संचालन में सुधार लाने के लिये प्रांत के अध्यापकों को वचन दिया जा चुका था कि संचालन शुल्क में सरकार द्वारा की जाने वाली कटौती बंद कर दी जाएगी। इससे अध्यापकों को अतिरिक्त आर्थिक लाभ की उम्मीद बन गयी थी। अध्यापकों ने यह विश्वास दिलाया कि वे ऐसा होने के बाद परीक्षा-संचालन के काम में पहले से ज्यादा रुचि लेंगे। आठ महीनों से इस आशय की फाइल चली हुई थी पर फैसला नहीं हो रहा था। इस दौरान उम्मीदें बहुत धार बनीं। एक रोज अचानक मालूम हुआ कि किसी अदने से नौकरशाह के सिर्फ एक सवालिया निशान ने फाइल की दिशा ही बादल दी।

इस बीच खज़ाने का महकमा बदल कर बाबूजी के पास आ गया। मेरी मानसिक तस्वीर के अनुसार अपेक्षाकृत उदार होने की संभावना वाले खज़ाना मंत्री जिस मांग को स्वीकृति नहीं दे सके, उसे बाबूजी बिलकुल नहीं देंगे, यह धारणा अनायास ही किसी घिनौने केकड़े की तरह मेरे दिमाग में बैठ गयी थी। लेकिन साहस बटोर कर मैंने बाबूजी से मिलने का फैसला किया। समस्या के महत्व को समझने में उन्हें बिलकुल देर नहीं लगी, अतः इससे जुड़ी आर्थिक व्यय की बात ही अपने आप गौण हो गयी। आधे घंटे से भी कम समय में स्वीकृति के आदेश मेरे हाथ में थे। बाबूजी का यह आश्वासन कि हरियाणा में शिक्षा के प्रसार और उद्धार से जुड़ी कोई भी मांग उनके मंत्री रहते पिछड़ने नहीं पायेगी, एक ऐसे चेक जैसा था जिसका कोई मूल्य नहीं आंका जा सकता था। वस्तुतः बाबूजी उत्तम शिक्षा को समाज के उद्धार की बुनियादी जरूरत समझते थे। शिक्षा को अपनी प्राथमिकताओं की सूची में पहला स्थान देते हैं। आंकड़े साक्षी हैं कि इन्हीं की प्रेरणा और सहयोग के कारण शिक्षा के अंतरिक्ष पर अनेक नयी योजनाओं ने जन्म लिया।

देश के हजारों लोगों के साथ बाबूजी भी आपातकाल में जेल में बंद कर दिये गये। इतिहास के इस काले दौर में क्रांतिकारियों का मुखौटा पहने कितने ही ऐसे निकले जो अवधि-रहित कारावास के भय से कांप उठे और जेल से छुटकारा पाने की तिकड़में करने लगे। ऐसे ही एक कथित विशिष्ट व्यक्ति ने बाबूजी को लुभावना सा खत लिखा। खत में लिखा था। जैन साहब आपातकाल देश के अधिकांश लोगों की मानसिकता का भाग बन गया है। निकट भविष्य में इसके खिलाफ बगावत होने के आसार दिखायी नहीं देते। आपातकाल की प्रशंसा में कहा जाने लगा है कि इस उपाय ने सामाजिक जीवन से अनुशासनहीनता को समाप्त कर अनेक समस्याओं का समाधान कर दिया है। विभिन्न

हीरक जयंती पर

सामाजिक संस्थाएं प्रस्ताव पास करके कहने लगी हैं कि देश के बीमार लोगों की दुरुस्ती के लिये आपातकाल की खुराक की इस समय जरूरत थी। अतः इस पृष्ठभूमि में अनिश्चितकालीन जेल में बंद रहने का कोई औचित्य नहीं है। इस खत में उन प्रबंधों का विवरण था जो इस व्यक्ति ने विभिन्न लोगों की रिहाई के लिये हरियाणा के तत्कालीन प्रशासन से खुशामद के बाद पूरे किए थे। लेकिन बाबूजी के उत्तर ने बता दिया कि वे उस भुरभुरी मिट्टी से नहीं बने जिसे प्रलोभन की किसी कमजोर उंगली से कुरेद कर धराशायी किया जा सकता है। बाबूजी ने बिना उबाल खाये गांधीवादी संयम के साथ जवाब वादिया-पत्र के लिये धन्यवाद, पर आपातकाल ने जिन जनतांत्रिक अधिकारों एवं मूल्यों की हत्या की है, उन्हें पुनर्जीवन कहां प्राप्त हुआ है। आपातकाल के कानूनों के रहते पूरा देश जेल बना हुआ है। हम लोग जिस जेल में बंद हैं, वह तो बहुत छोटी है। इस छोटी जेल को छोड़कर बड़ी जेल में आने का निमंत्रण मुझे स्वीकार नहीं है। आपातकाल के 20 महीनों में बाबूजी की भांति और भी अनेक लोग देश की विभिन्न जेलों में बंद रहे पर उन जैसी समझ और प्रतिबद्धता वाले लोग आटे में नमक के बराबर रहे होंगे। यह देश का दुर्भाग्य है कि सिद्धांतों के लिये समर्पित और नैतिकता की चमक से अलंकृत वास्तविक हीरे की पहचान का हमारे पास समय नहीं है। मौका लगने पर ऐसे लोगों का मज़ाक भी उड़ाया जाता है। योजना और निर्माण की दरकार वाले राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों में इस अदूरदर्शिता के कारण जो हानि हो रही है उसकी भरपाई आसानी से नहीं हो रही है। अगर सामाजिक जीवन से जुड़े व्यक्ति उत्तरदायित्वों का हिसाब रखने और मानने की आवश्यक शर्तों में बंधे होते तो बाबूजी उनमें न केवल सर्वोच्च स्थान पाते बल्कि राजनीति और समाज से जुड़े अधिकतर लोगों के लिये अनुकरणीय उदाहरण बनते।

इस शताब्दी के छठे दशक में बाबूजी पंजाब सरकार में मंत्री थे और सरदार प्रतापसिंह कैरों मुख्यमंत्री थे। यद्यपि कैरों अनेक मानवीय कमजोरियों से ग्रस्त थे। तो भी उत्तरदायित्वों के प्रति समर्पित भाव में अपना सानी नहीं रखते थे। लिहाजा उन्हें अपने सहयोगियों के गुण और अवगुणों का भान था। कैरों साहब ने बाबूजी की लगन और समझ से प्रभावित होकर हरियाणा के एक अन्य वरिष्ठ सहयोगी से पूछा था "यह हीरा आपने कहां छिपाकर रखा था।" तीस साल से पहले की गयी इस टिप्पणी को बाबूजी ने अपनी कार्यक्षमता और उपलब्धियों से अक्षरशः सही साबित किया। हरियाणा के लिये यह खेद की बात है कि बाबूजी जैसे कल्पनाशील और विद्वान व्यक्ति की सेवाएं प्राप्त नहीं की जा सकीं। जोड़तोड़ तथा छल-कपट की राजनीति का बोलबाला इसके लिये जिम्मेदार है।

आज 75 साल का अंक पार करते हुए बाबूजी वर्तमान युवा पीढ़ी के लिये हर लिहाज से एक आदर्श हैं। 1987 के बीच से लेकर 90 के आखिर तक बाबूजी को अनेक समितियों की बैठकों में भाग लेने पर मालूम हुआ कि नौकरशाही के ढोल में कितनी पोल है। इसके अलावा नौकरशाही को यह अहसास हुए बिना नहीं रहा कि उनका खोखलापन उजागर करने वाले लोग अभी बचे हैं। बैठक चाहे किसी भी विभाग की रही हो, जैन साहब आमंत्रित होने पर पूरी तैयारी के साथ उसमें आते थे। मंत्रियों की नकेल अपने हाथ में रखने वाले नौकरशाह इस पतले-दुबले हंसमुख व्यक्ति से डरकर या तो बैठकों से कतराते या तैयार होकर आते। बाबूजी द्वारा प्रत्येक बैठक की कार्यसूची के पूर्ण अध्ययन ने चंडीगढ़ सचिवालय के अधिकारियों पर जो छाप छोड़ी, उसका रंग काफी समय तक गहरा रहेगा। निर्माण योजनाओं की रूपरेखा बनाने से लेकर उनकी आपूर्ति तक नौकरशाही के योगदान की महत्ता को देखते हुए उनकी दृष्टि की नकारात्मकता बाबूजी के गले में गांठ बनकर ठहर गयी। बाबूजी की पैनी-पारदर्शी दृष्टि ने पहचान लिया कि नौकरशाही, काम के प्रति समर्पण की कमी, उत्तरदायित्व से पलायन और किसी काम को अंतहीन कल पर टालने जैसी चारित्रिक कमियों में आकंठ डूबी है।

यह स्थिति चिंताजनक तो अवश्य है लेकिन अकारण नहीं। आज़ादी के बाद तथाकथित स्वतंत्र चुनावों ने सत्ता के शीर्ष स्थानों पर राजनेताओं की जगह अधिकतर राजनीति के सौदागरों को ला बैठाया। प्रशासकीय पद की गरिमा का स्थान कपटपूर्ण चालों ने ले लिया। नेतृत्व प्रदान करने वाले लोगों के ऐसे पतन को देखकर नौकरशाही बेलगाम होकर राष्ट्रीय जनधन के साथ खुली खिलवाड़ में शामिल हो गयी तो हैरत कैसी ? बाबूजी ने बहती गंगा में हाथ धोने की बजाय सर्वस्वीकृत धारणा का यथाशक्ति विरोध किया।

बाबूजी किसी भी महत्वपूर्ण निर्णय पर पहुंचने के पहले अपने मिलने-जुलने वालों की राय लेना नहीं भूलते और पक्ष-विपक्ष दोनों का इनके यहां समान आदर है जो जनतंत्र की जान है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि बाबूजी का जीवन जनतांत्रिक मूल्यों की रक्षा का एक ज्वलंत, सजीव तथा सशक्त उदाहरण है। हमारी कामना है कि बाबू मूलचंद जैन चिरायु होकर हम सबका मार्ग दर्शन करते रहें।

Downloaded from moolchandjain.org